B.A. II Hindi Hons.

कृष्ण भक्ति साहित्य की प्रवृत्तियाँ

डॉ॰ सुनीता चन्द्र पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस॰एस॰ कॉलेज, जहानाबाद

(9) काव्यरूप :- लगभग संपूर्ण कृष्ण भक्ति साहित्य गीतिशैली में निबद्ध है। इसका मूल कारण है इस काव्य का कथ्य। चूंकि इसमें कृष्ण के बाल एवं किशोर रूप का ही प्राधान्य है जिनकी लीलाओं का वर्णन यहाँ हुआ है और लीला में अत्यंत भावाभिव्यक्ति एवं आनन्दमय क्षणों को ही ग्रहण करने की परम्परा रही है अतः ऐसे क्षणों की अभिव्यक्ति गीतिकाव्य ~~का~~ में ही कुशलता के साथ संभव है। ठीक इसके विपरीत रामभक्तिसाहित्य में राम का संपूर्ण जीवन ग्राह्य है जिसकी अभिव्यक्ति हेतु प्रबंधकाव्य की आवश्यकता अनुभूत होती है। यही कारण है कि कृष्ण काव्य में गीतिकाव्यों को ही प्रधानता मिली। वैसे बहुत थोड़े उदाहरण हैं जहाँ किसी कवि ने ~~क~~ कृष्ण चरित पर प्रबंधकाव्य लिखा हो। नन्ददास का भँवरगीत, ब्रजवासीदास का ब्रजविलास तथा हित वृन्दावनदास का लाड़सागर कृष्णभक्ति साहित्य के प्रमुख प्रबंधकाव्य हैं। इसके अतिरिक्त 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' एवं 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में कृष्णभक्ति साहित्य गद्य विशेषतः ब्रजभाषागद्य का प्रयोग हुआ है। इनके अतिरिक्त समस्त कृष्णभक्ति साहित्य गीतिकाव्यात्मक है।

(10) छन्द :- छन्द की दृष्टि से कृष्णभक्तिसाहित्य अत्यंत समृद्ध है। यह काव्य प्रायः भावात्मक है यही कारण है कि इसमें अधिकांशतः गीतिपदों का प्रयोग हुआ है। कथात्मक प्रसंगों में दोहा-चौपाई पद्धति का भी प्रयोग हुआ है। नन्ददास ने अपने 'रूपमंजरी' तथा 'रस मंजरी' ग्रंथों में दोहा चौपाई का ही प्रयोग किया, वहीं ~~सूरदास~~ सूरदास ने प्रधानतः पद का प्रयोग किया है। इनके अतिरिक्त कृष्णभक्तिसाहित्य में कवित्त, सवैया, छप्पय, कुण्डलियाँ, गीतिका, हरिगीतिका, अरिल्ल तथा रोला छन्दों आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है। स्पष्ट है कि इस साहित्य में विभिन्न छन्दों के प्रयोग के कारण इसमें विविधता तथा शोभा के आ जाने से यह काव्य अत्यंत मनोहारी बन पड़ा है।

(ii) भाषा :- कृष्णभक्ति साहित्य का बहुलांश ब्रजभाषा में ही रचा गया है। चूंकि स्वयं कृष्ण की लीला भूमि ब्रज ही थी अत: इनके भक्त भक्तों में ब्रजभाषा के प्रति लगाव जो अत्यन्त स्वाभाविक भी है। इस साहित्य में प्रयुक्त ब्रजभाषा अपनी माधुर्य और प्रभावपूर्णता के कारण अत्यन्त लोक प्रिय भाषा के रूप में विकसित हुई। इससे पूर्व यह एक बोली थी किन्तु इसकी निरन्तर-व्यापिनी लोकप्रियता ने इसे काव्यात्मक विस्तार प्रदान किया। कृष्ण लीला का साहचर्य पाकर यह भाषा दूर-दूर तक प्रसिद्ध एवं ~~लोकप्रिय~~ लोकप्रिय हो गयी। इसकी लोकप्रियता का इसी बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह भाषा संपूर्ण उत्तर भारत की साहित्यभाषा बन गयी। यहाँ तक कि इसने सुदूर बंगाल तक को प्रभावित किया। आनेवाले हिन्दी के परवर्ती कालों में भी इस भाषा का प्रभाव रहा। संपूर्ण रीतिकाल तथा भारतेन्दु युग (आधुनिककाल) की भी काव्य भाषा ब्रजभाषा ही बनी रही। कृष्णभक्त कवियों का सारा ध्यान अपने आराध्य देवता की लीलाओं की अभिव्यक्ति पर था भाषा के स्वरूप पर नहीं। यही कारण है कि इस भाषा की वैयाकरणिक व्यवस्था पर किन्हीं का ध्यान नहीं गया। यही कारण है कि इसके परिमार्जन, स्थिरीकरण, रूपनियमन और व्याकरण व्यवस्था में शिथिलता दिखाई पड़ती है।

कृष्णभक्ति साहित्य आनन्द और उल्लास का साहित्य है। इसमें सर्वत्र राधा-कृष्ण के प्रेम माधुर्य से उत्पन्न श्रृंगाररस का अनुभव होता रहता है। भाव, भाषा, कला तथा भावनात्मक दृष्टि से भी यह साहित्य अनुपम है। इस साहित्य की अपनी विशेषताएं हैं और अपनी सीमाएं भी हैं। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि यह साहित्य हिन्दी साहित्य का मुकुटमणि है।